भारत-रूस सम्बन्ध
(India - Russia Relations)

सोवियत संघ की बदहाल आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए सोवियत संघ के राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचेव ने पेरेस्त्रोइका और ग्लासनोस्त की नीतियों की उद्घोषणा की। इसका फायदा उठाकर सोवियत संघ के गणराज्य अपनी अपनी स्वतंत्रता की माँग करने लगा। 25 Dec 1991 को सोवियत राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचेव द्वारा त्याग-पत्र देते ही सोवियत प्रणाली लड़खड़ाकर गिर गई अर्थात् सोवियत संघ का विघटन हो गया। इसके विघटन से ही 1945 से चला आ रहा शीतयुद्ध तो समाप्त हुआ ही, साथ ही विश्व में विद्यमान दो ध्रुवत्व भी खत्म हो गया।

सोवियत रूस के विघटन के बाद रूस की स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर हो गई। इसलिए रूस के लिए यूरोप के देशों से बेहतर सम्बन्ध रखना उसके आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से आवश्यक हो गया और उसने ऐसा ही किया। इस दौरान भारत से उसके सम्बन्ध सामान्य बने रहे, किन्तु रूसी व्यापार एवं संबंध के केन्द्र में यूरोप के विकसित राष्ट्र एवं एशिया के जापान एवं चीन जैसे विकसित देश थे।

1993 में जब रूस के तत्कालीन राष्ट्रपति भारत की यात्रा पर आए, तो उन्होंने 1971 में हुए भारत-सोवियत रूस समझौते का नवीनीकरण किया। यद्यपि इस नवीनीकरण में सुरक्षा संबंधी पक्षों को हटा दिया गया था, फिर भी इस समझौते से दोनों देशों को आपसी संबंधों के सुधार में सहायता मिली। इसके बाद 1994 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव रूस की यात्रा पर गए एवं दोनों देशों के आपसी सहयोग को सुदृढ़ बनाने संबंधी मास्को घोषणापत्र पर रूसी राष्ट्रपति येल्तसीन के साथ हस्ताक्षर किए। दोनों नेताओं ने बहुसांस्कृतिक राष्ट्रों के हितों की सुरक्षा सम्बन्धी एक और मास्को घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए। इसके परिणामस्वरूप दोनों देशों के अन्तर्राष्ट्रीय एवं द्विपक्षीय सद्भावना में भी वृद्धि हुई तथा रूस की ओर से भारत को सैन्य उपकरणों का निर्यात पुनः शुरू हुआ। इसके अतिरिक्त दिसम्बर 1994 में दोनों देशों के बीच 8 अन्य समझौतों पर [illegible] हुए जिनसे भारत-रूस के सम्बन्धों में और अधिक निकटता आई। [illegible] एवं तकनीकि सहयोग, गहाजरानी, द्विपक्षीय निवेशों की सुरक्षा, व्यापार व अन्तरिक्ष सहयोग सम्बन्धी समझौते शामिल थे। मार्च 1995

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

में दोनों देशों ने हथियारों के और कानूनी व्यापार और नशीले पदार्थों को रोकने संबंधी समझौते पर भी हस्ताक्षर किए। लेकिन पश्चिमी देशों से साथ रूस को जो उम्मीद बँधी थी, उस पर पानी फिर गया। तो रूस ने अपने पुराने मित्र भारत की ओर अपना रुख किया। सैन्य आवश्यकताओं एवं राजनीतिक अवसरवाद तथा संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता का पक्ष लेने के लिए भारत भी रूस के साथ सम्बन्धों में पहले जैसी गर्माहट चाहता था। इस दिशा में सार्थक प्रयास अक्टूबर 2000 में प्रारंभ हुए। जब तत्कालीन रूसी प्रधानमंत्री भारत यात्रा पर आए। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों ने सामरिक भागीदारी संबंधी एक घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए। इसके अतिरिक्त द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाने की दिशा में अन्य समझौतों पर भी हस्ताक्षर किए गए। इस घोषणापत्र में भारत-रूस संबंधों के सभी पक्षों जैसे राजनीतिक, प्रतिरक्षा, अर्थ एवं वाणिज्य, विज्ञान एवं तकनीकि तथा सांस्कृतिक आदि की दीर्घकालीनता पर विस्तारपूर्वक बात कही गई। द्विपक्षीय वार्ता की समाप्ति पर जारी संयुक्त वक्तव्य ने भी विभिन्न द्विपक्षीय, क्षेत्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर भारत एवं रूस के रुख को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

नवम्बर 2001 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी रूस की यात्रा पर गए, तब भारत एवं सोवियत रूस के सम्बन्धों का एक नया अध्याय शुरू हुआ। इसके बाद दिसम्बर 2002 में राष्ट्रपति पुतिन दूसरी बार भारत यात्रा पर आए। जिसके दौरान दोनों देशों के बीच सामरिक सहभागिता को और मजबूत बनाने संबंधी एक घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए गए। दोनों देशों के नेताओं की इन अधिकारिक यात्राओं के परिणामस्वरूप राजनीतिक, प्रतिरक्षा, आर्थिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोणों से अत्यन्त महत्वपूर्ण अनेक समझौतों पर सहमति बनी। दोनों देशों ने 2007 में व्यापार, निवेश एवं आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए 'इंडियन-रशियन फोरम ऑन ट्रेड एण्ड इन्वेस्टमेन्ट' का गठन किया, जिसकी पहली बैठक 12 एवं 13 फरवरी 2007 को नई दिल्ली में हुई।

रूसी प्रधानमंत्री मेदवेदेव की दिसम्बर 2008 की भारत यात्रा और भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की इसी वर्ष रूस यात्रा से भी दोनों देशों के सम्बन्धों में और मधुरता आई। दोनों देशों के सांस्कृतिक सम्बन्धों को दृढ़ता प्रदान करने के दृष्टिकोण से 2008 में भारत ने रूस का वर्ष मनाया गया। इसके बाद 2009 में रूस में भी भारत का वर्ष मनाया गया। दोनों देशों ने आतंकवाद से मुकाबला करने के लिए हमेशा साथ रहने का वादा किया। नवम्बर 2009 को भारत ने रूस के साथ एक नाभिकीय समझौते पर

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

हस्ताक्षर किए, जिससे दोनों देशों के मध्य संबंध और भी बेहतर हुए हैं।

21 Dec 2010 को भारत और रूस के बीच सहयोग का दायरा व्यापक बनाते हुए विभिन्न क्षेत्रों में 30 समझौतों पर हस्ताक्षर किया और अपना कारोबार अगले पाँच सालों में 20 अरब डॉलर तक ले जाने का संकल्प जाहिर किया। रूसी राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव की भारत यात्रा के दूसरे दिन दोनों देशों ने सरकार के स्तर पर 11 समझौतों पर हस्ताक्षर किए जबकि 19 समझौते दूसरे विभिन्न स्तरों पर किए गए। प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह ने भारत-रूस सम्बन्धों को समय की कसौटी पर जाँचा परखा बताया और रूसी राष्ट्रपति ने कहा कि भारत और रूस रक्षा एवं परमाणु सहयोग के परंपरागत क्षेत्रों से अलग हटकर अब दूसरे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ा रहे हैं। इसके लिए उन्होंने औषधि क्षेत्र तथा गैस तेल क्षेत्र की मिसाल दी। दोनों पक्षों के बीच समझौतों में आपदा-प्रबंधन, वीजा नियमों को सरल बनाना, तेल और गैस क्षेत्र में सहयोग, विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी तथा हाइड्रोकार्बन और औषधीय क्षेत्र में सहयोग शामिल है। असैन्य परमाणु क्षेत्र को आगे बढ़ाते हुए दोनों देशों ने रिएक्टर प्रौद्योगिकी एवं संबंधित क्षेत्र में अनुसंधान और विकास के लिए एक करार किया। 2010 से 2020 तक दोनों देश विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में मिलकर काम करेंगे। अंतरिक्ष के क्षेत्र में रूस और भारत के चंद्र अभियान तथा मानव युक्त अंतरिक्ष उड़ानों में सक्रिय सहयोग करेगा। रूस की उपग्रह आधारित सूचना संपर्क प्रणाली ग्लोनास भारत को उन्नत और सटीक सिग्नल उपलब्ध करायेगा। 12 वीं शिखर वार्ता के लिए दोनों देश तीन दिवसीय यात्रा पर मास्को पहुंचे। डॉ० मनमोहन सिंह और रूस के राष्ट्रपति दमित्री मेदवेदेव ने 16 दिसम्बर 2011 को रणनीतिक सहयोग मजबूत करने के लिए पाँच समझौतों पर हस्ताक्षर किए। उल्लेखनीय है कि भारत ने नेरपा (Nerpa) परमाणु पनडुब्बी को 10 वर्ष की लीज पर प्राप्त करने के लिए समझौता रूस के साथ किया था, वह जनवरी 2012 में भारत को सौंप दी। भारत और रूस के बीच द्विपक्षीय रणनीतिक साझेदारी में मजबूती के उद्देश्य से भारतीय प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह ने 20 अक्टूबर 2013 को मास्को में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतीन के साथ 14 वें वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया। डॉ० मनमोहन

सिंह ने कहा कि रूस भारत की रक्षा जरूरतों के लिए 'अनिवार्य' सहयोगी बना रहेगा।

निष्कर्ष :- निष्कर्षत: सोवियत रूस के विघटन के बाद रूस को आर्थिक क्षेत्र में गहरा आघात लगा। भारत के साथ यूरोपीय देशों परमीसहारा बनने की चेष्टा पर यूरोपीय देशों से कोई सहयोग नहीं किया तब रूस अपने पुराने मित्र भारत के हाथ से हाथ मिलाकर चलना उचित समझा, और भारत ने भी रूस के साथ सच्ची दोस्ती निभाकर दुनिया को चौंकाया। सोवियत संघ के उत्तराधिकारी के रूप में आज भी रूस विश्व की एक ऐसी ताकत है, जो अमेरिकी वर्चस्व को रोकने में सहायक सिद्ध होगा। मई 2014 में जब भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बने और फिर जब दुबारा 2019 में इनकी पुनरावृत्ति हो गयी तो मोदी ने रूस के संबंधों में संजीवनी भर दिया। आशा ही नहीं विश्वास भी है रूस और भारत संबंध सदा कायम रहेगा, और दुनिया को दोस्ती की याद दिलाते रहेगा।

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान
डी० के० कॉलेज, डुमराँव
दिनांक - 23/05/2020

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA